## CBSE Test Paper 02

### अपठित गद्यांश

1. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

   वह ईंट धन्य है जो कट-छँटकर कंगूरे पर चढ़ती है और हमारा ध्यान अपनी ओर खींचती है। इसके साथ-साथ वह ईंट भी धन्य है जो जमीन के सात हाथ नीचे जाकर नव में गढ़ गई और इमारत की पहली ईंट बनी। उसी ईंट पर इमारत की मजबूती टिकी रहती है। उस ईंट के हिल जाने से कंगूरा नीचे आ गिरेगा अर्थात् नींव की ईंट अधिक महत्त्वपूर्ण है। उस ईंट ने स्वयं को इसलिये नींव में नीचे डाल दिया ताकि इमारत सौ हाथ ऊपर जा सके, उस ईंट ने अंधे कुएँ में जाना इसलिए स्वीकार किया ताकि ऊपर के लोगों को साफ हवा मिलती रहे, सुनहरी रोशनी मिलती रहे। कुछ स्वतंत्रता सेनानियों ने इसलिए अपना बलिदान दे दिया ताकि आने वाली आजादी का सुख दूसरे लोग भोग सकें। सुन्दर निर्माण के लिए हमेशा बलिदान की आवश्यकता होती है। यह बलिदान चाहे ईंट का हो अथवा व्यक्ति का। सुंदर इमारत बनाने के लिए पक्की-लाल ईंटों को नींव में जाना ही पड़ता है। उसी प्रकार समाज को सुंदर बनाने के लिए कुछ तपे-तपाए लोगों को चुपचाप बलिदान देना ही पड़ता है।

   i. कंगूरे की ईंट को लेखक ने क्यों धन्य माना?
   ii. नींव की ईंट को क्यों धन्य माना गया?
   iii. कंगूरे की ईंट और नींव की ईंट में कौन अधिक महत्त्वपूर्ण है? और क्यों?
   iv. 'पक्की-पक्की लाल ईंट' कह कर लेखक किन्हें उत्साहित कर रहा है?
   v. निम्नलिखित में किस शब्द में 'निर्' उपसर्ग नहीं है- (क) निर्माण, (ख) नीरव।

2. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

   यह काफी पुरानी घटना है। तब तमिलनाडु राज्य का नाम मद्रास था। मद्रास प्रांत के एक स्टेशन के निकट एक प्वाईंटमैन अपना प्वाईंट (वह उपकरण जिससे गाड़ियों का ट्रेक बदला जाता है) पकड़े खड़ा था। दोनों ओर से दो गाड़ियाँ अपनी पूरी गति से दौड़ी चली आ रही थीं। उस दिन मौसम खराब था और वह आँधी-तूफान का संकेत दे रहा था। ऐसे भयावह मौसम में रोशनी के भी भरपूर साधन नहीं थे। प्वाईंटमैन अपने काम के लिए मुस्तैदी से तैयार था। तभी उसे अपने पैरों पर कुछ रेंगता हुआ महसूस हुआ। उसने देखा तो दंग रह गया। एक साँप उसके पैरों से लिपट रहा था। प्वाईंट उसके हाथ में था। डर के कारण उसकी घिग्घी बँध गई। किन्तु तभी उसने सोचा कि यदि वह प्वाईंट हाथ से छोड़ देगा तो ऐसे में दोनों गाड़ियाँ परस्पर भिड़ जाएँगी और असंख्य लोगों की मृत्यु हो जाएगी। साँप के काटने से तो अकेले सिर्फ उसकी जान जाएगी लेकिन, असंख्य लोगों की जान बच जाएगी। कम-से-कम मरते-मरते वह असंख्य लोगों की जान बचाने का पुण्य तो अर्जित कर ही लेगा। यह सोचकर वह बिना हिले-डुले प्वाईंट को पकड़े खड़ा रहा। कुछ ही देर में दोनों रेलगाड़ियाँ की घड़घड़ाहट तेज़ हुई और रेलगाड़ियाँ आराम से प्वाईंटमैन के द्वारा पकड़े गए प्वाईंट की सहायता से अलग-अलग ट्रेक पर निकल गईं। उधर साँप रेलगाड़ियों की घड़घड़ाहट सुनकर प्वाईंटमैन का पैर छोड़कर चला गया। रेलगाड़ियों के जाने के बाद जब प्वाईंटमैन का ध्यान अपने पैरों की ओर गया तो वह यह देखकर दंग रह गया कि वहाँ कुछ न था। यह देखकर उसके मन से स्वतः ही निकला, 'सच ही है, जो इंसान सच्चे मन से लोगों की मदद करते हैं उनकी सहायता ईश्वर स्वयं करते हैं।' बाद में

जब इस घटना का पता अधिकारियों को चला तो उन्होंने न सिर्फ प्वाईंटमैन को शाबासी दी अपितु उसे पुरस्कार देकर सम्मानित भी किया।

i. प्वाईंटमैन का क्या काम होता है?
ii. प्वाईंटमैन क्या देखकर दंग रह गया?
iii. प्वाईंटमैन ने क्या निर्णय लिया?
iv. साँप कैसे भाग गया?
v. प्वाईंटमैन ने साँप के भागने पर क्या सोचा?

**CBSE Test Paper 02**

**अपठित गद्यांश**

## Answer

1. i. ईंट कट-छँटकर जब कंगूरे पर चढ़ती है तो सबका ध्यान अपनी ओर खींचती है। इसलिए लेखक ने उसे धन्य माना।
   ii. इमारत को स्थायित्व देने के कारण नींव की ईंट को धन्य माना गया।
   iii. नींव की ईंट अधिक महत्वपूर्ण होती है। क्योंकि इमारत की मज़बूती उसी नींव की ईंट पर टिकी रहती है।
   iv. पक्की-पक्की लाल ईंट कहकर लेखक युवाओं को उत्साहित कर रहा है। वह उन्हें तपे-तपाये लोग भी कहता है।
   v. (ख) नीरव
2. i. प्वाईंटमैन का काम प्वाईंट (वह उपकरण जिससे गाड़ियों का ट्रेक बदला जाता है) पकड़े खड़ा रहना है।
   ii. प्वाईंटमैन साँप को अपने पैरों में लिपटते देखकर दंग रह गया।
   iii. प्वाईंटमैन ने सोचा कि यदि वह प्वाईंट छोड़ देगा तो गाड़ियाँ परस्पर भिड़ जाएँगी और असंख्य लोगों की मृत्यु हो जाएगी जबकि साँप के काटने से अकेले उसकी जान जाएगी इसलिए उसने प्वाईंट पकड़े खड़े रहने का निर्णय लिया।
   iv. रेलगाड़ियों की घड़घड़ाहट सुनकर साँप भाग गया।
   v. प्वाईंटमैन ने साँप के भागने पर सोचा कि जो इंसान सच्चे मन से लोगों की मदद करते हैं उनकी सहायता ईश्वर स्वयं करते हैं।